IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रवासी साहित्य के विकास का मूल्यांकन

Archna Daniel

शोध सार :-प्रवासी साहित्य एक विकास यात्रा है, ज्यों ज्यों भारतीय विदेश जाते गये वही बसने लगे और अततः भाषा वे साथ ले गये थे, तब से वे अपनी अभिव्यक्तियाँ भारतवासियों तक पहुँचाने लगे, तभी से प्रवासी साहित्य का जन्म हुआ। हिन्दी का प्रवासी साहित्य एक वास्तविकता है और हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा का ही एक अंग है यह इक्सवी सदी का एक नया साहित्य विमर्श है। प्रवासी साहित्य का उद्भव भारतीय प्रवासी के नाम से आया। प्रवास की क्रिया एक ही समय व्यक्ति देश और विदेश से संबंधित होने के कारण विश्व व्यापी बन चुकी है। प्रायः किसी भी देश के लोग देश की आर्थिक अस्थिरता वाली स्थिति में प्रवास धारण करते है। प्रवास धारण कने के संकल्प के पीछे पश्चिम के पूँजीवादी व्यवहार का अहम् योगदान होता है।

प्रवासी साहित्य के विकास के मूल्यांकन पर यदि दृष्टि करें तो प्रो. सुषमा बेदी ने प्रवासी साहित्य को नई दिशा प्रदान की है। प्रो. तजेन्द्र शर्मा ने प्रवासी हिन्दी साहित्य में चुनौतियाँ पर विचार किया। डॉ. स्नेह ठाकुर द्वारा प्रवासी साहित्य में आने वाली समस्याओं पर स्त्री संवेदनाओं पर विचार किया गया है। दिव्या माथुर द्वारा मातृभाषा को गौरव प्रदान किया गया इस शोध का उद्देश्य भारतीय साहित्यकारों के द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख करना है।

शोध आलेख :- प्रवास का अर्थ –परदेश में जाकर रहना, विदेश–जाना है, देशान्तरवास और अंग्रेजी में इसे emigration और imigration भी कहते है, प्राचीन काल में एक राज्य से दूसरे राज्य में जाना, परदेस गमन कहलाता था। पहले प्रवास शब्द का प्रचलन नहीं था,ज्यादा से ज्यादा विदेसिया शब्द प्रचलन में था। भारत से विदेश जाने वाले व्यक्तियों का लक्ष्य प्रार्थ, धर्म और व्यापार ही था, परन्तु भारत में अंग्रेज, फ्रेंच डच आदि शासक अपने अपने उपनिवेशी देशों में हजारों भारतीय मजदूरों को छल कपट से गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले गये, इस प्रकार मॉरिशस,फ़िजी,सूरीनाम ,ग्याना, त्रिनिदाद,आदि देशों में हजारों भारतीय पहुँचा दिये गये इन अशिक्षित अर्धशिक्षित, कुशल अथवा अर्द्धकुशल मजदूर या मध्यम वर्गीय इंजीनियर सब में अपनी मातृभूमि छूटने का 'दर्द था, यही दर्द जब–जब शब्दों में फूटा तो साहित्य में स्वर बन गया ।प्रवासी भारतीयों की जनसंख्या 48 देशों में 2 करोड़ है, इनमें से 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहाँ की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते है, और वहाँ की आर्थिक और राजनैतिक दशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

गिरिमिटिया मजदुरों के देश का साहित्य – उन्नीसवीं शताब्दी मॉरिशस, फ़िजी, ग्याना, एवं सूरीनाम एण्ड त्रिनिदाद में हजारों की संख्या में भारतीय मजदूरों को गिरमिटिया प्रथा अर्थात् शताब्दी कानून के अंतर्गत भेजा गया था। मॉरिशस में भारतीय मजदूर अपनी भाषा और संस्कृति को लेकर गये थे, किंतु उनकी भारतीय भाषा भोजपुरी थी, उन्होने वहाँ हिंदी का ज्ञान प्राप्त किया। मॉरिशस में सन् 1935 में हिन्दी प्रचारिणी सभा; दुर्गा हस्तलिखित पत्रिका. आदि का संकलन हुआ।मॉरिशस, फ़िजी, सूरीनाम ,ग्याना, त्रिनिदाद, आदि देशों में जाने वाला गिरमिटिया भारतीय मजदूरों ने असीम यातनाएँ; अपमान तथा संघर्ष झेला था, उनके लिये वापस अपने देश में लौटने की सम्भावनाएं भी अत्यल्प ही थी, परन्तु अमेरिका एवं यूरोप जाने वाले प्रवासी भारतीयों की ऐसी दारूण स्थिति नहीं थी, वे कभी–कभी देश लौट सकते थे । विश्व में फैले इस भारतवासियों के संसार से संपर्क का रास्ता आधुनिक काल में महात्मा गांधी ने खोला था, जब वे उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में दक्षिण अफ्रीका गए थे। इसके उपरान्त पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने भारत में प्रवासी संसार के प्रति देश में नयी जागृति उत्पन्न की ।भारत के स्वतंत्र होने पर जब लक्ष्मी लाल सिंघवी लोक सभा के सदस्य बने तो उन्होनें प्रवासियों को भारतवंशी नाम दिया । लक्ष्मी लाल सिंघवी ने तो इंग्लैण्ड में अपने निवास स्थान पर 28 जून 1992 को अटल बिहारी वाजपेयी को एकल पाठ कराकर तो इतिहास ही रच डाला । 9 जनवरी 2003 को पहला प्रवासी भारतीय दिवस आयोजित किया, जिससे प्रवासी साहित्य एवं संस्कृति के प्रति देश में नयी चेतना व नयी सम्बेदना का उदय 'हुआ । विदेशों में जाने वाले भारतीय वहाँ केवल शारिरिक रूप से नहीं जाते, अपने भौतिक सामान के

साथ वे अपने मन की गठरी में चुपचाप अपनी संस्कृति, जीवन मूल्य और परंपराए बाँध के ले जाते हैं और विदेशी धरती पर बड़े यत्न से इस धरोहर के रक्षण और संवर्धन में जुटे रहते हैं ।यूरोप, अफ्रीका एशिया तथा आस्ट्रेलिया के देशों में प्रायः प्रवासी हिंदी साहित्य का समुचित विकास हुआ है।

कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह, रामेश्वर अशान्त गुलाब खंडेलवाल, रामबहुल, डा. विजय मेहता, सुपम बेदी, डा. अंजना सुधीर, सुधा ओम डींगरा, रेणुगुप्ता राजवंशी आदि प्रवासी लेखकों ने हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । खण्डेलवाल कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह के ने अमेरिका में प्रवासी साहित्य के विकास में बहुत कार्य किये ।उषा प्रियम्वदा कई दशको से अमेरिका में प्रवासी के रूप में रहकर साहित्य की रचनाएं कर रही है। सुषम बेदी और डा. अंजना संधीर, कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ाती है, और साहित्य रचना कर रही है।

प्रवासी साहित्यकारों का हिंदी के विकास में योगदान–

प्रवासी साहित्यकार जिन्होंने प्रवासी साहित्य को एक नई दिशा दी। प्रवासी साहित्य की आवश्यकता क्यों हुई इसे नई श्रेणी में लाकर क्यों खड़ा किया क्योंकि विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाने एवं पाठ्यक्रम के शामिल करने के लिए, विदेशों में हिन्दी सीखने के सकारात्मक माहौल के निर्माण के लिए प्रवासी साहित्यकारों ने कार्य किया। अभिमन्यु जिन्हें मॉरीशस का प्रेमचंद कहा जाता है। तजेन्दू शर्मा जिनकी कहानियां संवेदनशीलता पर आधारित है । इसी प्रकार सुषम बेदी वैश्विक स्तर पर प्रभारी साहित्य को पहचान दिलाई है स्नेह ठाकुर भारतवंशियों के लिए सदा संवेदनशील रही है उन्होंने उपनिषद दर्शन एवं आध्यात्मिक भावनाओं पर आधारित पुस्तकों का रचना की। अर्चना पैन्यूली जिन्होंने प्रवासी साहित्य को संस्कृति के प्रति नई चेतना एवं नई संवेदना प्रदान की । भारत वासियों को कनाडा में रहकर धर्म के प्रति जागरूक करती रही है। यह सभी प्रवासी साहित्यकार जिन्होंने हिंदी को विश्व में स्थान दिलाया।

अभिमन्यु अनत– अभिमन्यु अनत मॉरीशस का गौरव है ।भारत से बाहर मॉरीशस ही एक ऐसा देश है जहां पर हिंदी में पठन–पाठन का कार्य किया जाता है अभिमन्यु अनत मॉरीशस के एकमात्र ऐसे लेखक हैं जिन्होंने सर्वाधिक विधाओं पर पुस्तके लिखी है अभिमन्यु अनत माँरीशस में उपन्यास साहित्य की सृष्टि करने वाले अकेले लेखक हैं इन्हें माँरीशस का प्रेमचन्द कहा जाता है। अभिमन्यु अनत ने 'लाल पसीना' उपन्यास के माध्यम से भारतीय मजदूरों पर अंग्रेजों द्वारा किए गए क्रूर अत्याचारों का चित्रण किया है, उन्हेांने अपने समाज की संस्कृति, अस्मिता के संघर्ष का जीवंत चित्रण किया है। अभिमन्यु अनत यथार्थवादी थे, लेकिन जीवन मूल्यों तथा आर्दशवाद के साथ। अभिमन्यु अनत ही सबसे पहले ऐसे प्रवासी साहित्यकार का प्रतिनिधित्व करें वे केवल मॉरीशस के सबसे अधिक सशक्त हिन्दी साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित ही नहीं हुए बल्कि भारत के लोकमानस में मॉरीशस के प्रतीक के रूप में स्वीकृत हुए।

सुषम बेदी – सुषम बेदी की रचनाओं में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते दक्षिण एशियाई देशों के नागरिकों खासकर प्रवासी भारतीयों के मानसिक द्वंद का बखुबी उल्लेख किया है। सुषम बेदी ने अपनी लेखनी के माध्यम से वैश्विक स्तर पर प्रवासी हिन्दी साहित्य को पहचान दिलायी। हवन डॉ. सुषमम वेदी का पहला उपन्यास है, जो भारतीयता तथा अमेरिकावाद के द्वंद का उपन्यास है। पंजाब का एक आर्य समाजी संस्कार वाला परिवार अमेरिका आ जाता है, वह भारतीय संस्कार, मर्यादा और नैतिकता से जीवन जीना चाहता है, परन्तु अमेरिका के हवन कुण्ड में उनकी आहुती देनी पड़ती है। हवन और लौटना उपन्यास में सुषम बेदी जी ने नस्लवाद जैसी गंभीर संवेदनशील समस्याओं को उठाया है।

तजेन्द्र शर्मा– ब्रिटेन में रहने वाले तजेन्द्र शर्मा समकालीन साहित्यकार तजेन्द्र शर्मा पूँजीवादी विचारधारा एवं मार्क्सवादी विचारधारा को अपने साहित्य का आधार दिया है। तजेन्द्र जी अतुलनीय कथाकार हैं, तजेन्द्र शर्मा जी बहुमुखी प्रतिमा के धनी कथाकार, गजलकार तथा काव्य रचना भी करते हैं। तजेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में कब्र का मुनाफा, कैंसर, हाथ से फिसलती जमीन, कोख का किराया आदि में वैवाहिक बंधन एवं बदलते समाज के साथ दाम्पत्य जीवन को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। देह की कीमत कहानी में उन्होंने मानवीय संवेदना को व्यक्त किया है, जो लोग सही तरीके से विदेश नहीं जा पाते वे तरह–तरह के गैर कानूनी तरीकों के द्वारा विदेश जाना चाहते हैं, उन लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ढिबरी टाइट' विदेशी भाषा की अज्ञानता के कारण प्रवासी भारतीयों को जो कष्ट उठाने पड़ते हैं इसका वर्णन मिलता है। तजेन्द्र शर्मा की कैंसर कहानी में पति–पत्नी में परस्पर प्रेम तथा समर्पण सराहनीय है। तजेन्द्र शर्मा हिंदी की वैश्विकता को लंदन में व्यापक रूप से स्थापित किया है उर्दू की रवानगी पंजाब की अस्मिता और हिंदी के सहज प्रवाह उनकी कथा उपन्यास में देखने को मिलते हैं

स्नेह ठाकुर– स्नेह जी भारतवासियों के लिए संवेदनशील रही, भारतीय प्रवासियों को अपने साहित्य के माध्यम से धर्म के प्रति जागरूक करती रही हैं। उपनिषद दर्शन जो कि ईथोपनिषद एवं आध्यात्मिक भावनाओं पर आधारित है, भारतीय प्रवासियों के लिए एक बहुत बड़ी सौगात है। स्नेह जी वसुधा हिंदी साहित्य की पत्रिका जो कि त्रैमासिक पत्रिका है, जिसमें कविताओं गजलों और अनेक साहित्य का संकलन

है, यह कनाडा एवं भारतीय प्रवासी के बीच में एक सेतू का कार्य करती है। कैनाडा की फेडरल गवर्नमेंट के मल्टीकल्चरिजम एण्ड हैरिटेज डिपार्टमेंट द्वारा 'अनमोल हास्य के क्षण' पुस्तक हेतु अधिकतम अनुदान से सम्मानित किया गया। वर्ष 2003 में पुस्कार के लिए मनोनीत कवि के रूप में सम्मानित किया गया। मानद फैलोशिप रिसर्च एवं फाउंडेशन इंटरनेशनल से सम्मानित किया गया। कनाडा से विश्व भारती एवं हिन्दी चेतना (1998) से हिन्दी पत्रिकाएँ निकाली गयी, स्नेह ठाकुर का "कनाडा में प्रवासी साहित्य के रूप में अपना स्थान है। स्नेह ठाकुर ने कनाडा में हिंदी भाषा के विकास पर एवं विस्तार में योगदान दियौ। उनके द्वारा टोरंटो में सरकारी और प्राइवेट स्तर पर हिंदी का शिक्षण दिया जा रहा है।

स्नेह ठाकुर ने अनेक कविताएं लिखी जिसमें जीवन–निधि अनुभूतियां, जीवन के रंग, काव्यांजलि बहुत लोकप्रिय हैं। स्नेह जी की साहित्यक रचना देश संस्कृति सभ्यता मानव रोग, मानव की चिंताओं और समाज एवं परिवेश में होने वाली हर घटनाओं से ओतप्रोत है।

दिव्या माथुर– प्रवासी लेखिकाओं में दिव्या माथुर का नाम उल्लेखनीय हैं, वे लगभग 15 वर्षों से इंग्लैंड में है, उन्होंने हिन्दी को अपनी सर्जनात्मकता की भाषा बनाया हुआ है। उन्होंने इंग्लैण्ड में रहकर न केवल मातृभाषा को गौरव प्रदान किया है बल्कि हिन्दी को विश्व रंगमंच पर सथापित करने में भी अपना योगदान करती है। दिव्या जी की उपन्यास शाम भर बातें कविता संग्रह– रेत का लिखा बहुत ही प्रचलित काव्य संग्रह है जिसमें उन्होंने विभिन्न रूपों को अपनी काव्यात्मक दृष्टि एवं संवेदना से आत्मसात करके अपनी सर्जनात्मक कल्पना की धनीभूतता का प्रमाण दिया है।

अर्चना पैन्युली– डेनमार्क में बसी अर्चना पैन्युली एक सशक्त हिन्दी लेखिका है, इन्होंने हिन्दी और भारतीय संस्कृति के संरक्षण की दिशा में सारगर्भित शोध लेख लिखे हैं, उनकी रचनाओं में डेनमार्क के मानव जीवन और सामाजिक राजनैतिक परिवेश देखने को मिलता है। उनका उपन्यास ''वेयर डू आई बिलांग'' डेनिश समाज पर लिखा प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसमें उन्होंने विस्थापन, प्रवास, संस्कृति भेद, आधुनिकता और पारंपरिक जीवन मूल्यों को अपनी रचनाओं में समाहित किया है। उन्हें डेनमार्क में इंडियन कल्चरल सोसायटी द्वारा 'प्राइड ऑफ इंडिया' सम्मान से सम्मानित किया गया, उन्हें इंडियन कल्चरल एसोसिएशन द्वारा प्रेमचंद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास पॉल की तीर्थयात्रा फेमिना सर्वे द्वारा वर्ष 2016 के सर्वश्रेष्ठ दस उपन्यासों में घोषित हुआ है।अर्चना जी प्रवासी भारतीय समाज के सामाजिक और साहित्य कार्यक्रमों की अनिवार्य अंग बनी।

उपसंहार :-इस प्रकार विदेश में रहने वाले प्रवासी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में प्रवासी भारतीयों की जीवन शैली और उनके जीवन के तनावों और संघर्षों का वर्णन किया है, प्रवासी साहित्य प्रवासी लोगों के द्वारा लिखा गया साहित्य है इनक साहित्य की अंतर्वस्तु तथा उसकी भीतरी विशेषता या सुंदरम अप्रतिम है । विश्वभर के प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अपनी मानसिक अनुभूति जीवन दृष्टि, यथार्थ के प्रति बौद्धिक तथा भावनात्मक चेतना को लेकर न केवल कविताएँ, गजल, कहानी उपन्यास, व आलेख आदि लिखकर हिन्दी साहित्य को एक नई पहचान दे रहे हैं। हिंदी के प्रवासी साहित्य में 81 प्रवासी हिंदी कवित्री यों की 324 कविताएं संकलित है जिससे यह प्रमाणित होता है कि प्रवासी साहित्यकार कितनी विपुलता के साथ हिंदी के विकास को अग्रेषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं ।

संदर्भ:-

1– प्रवासी साहित्य–एक विकास यात्रा सुषम बेदी

2– विदेशी धरती पर भारतीय स्त्री–डॉ. कविता वाचवनवी सृजनात्मक लेखन

3– प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ–तजेन्द्र शर्मा

4– हिंदी का प्रवासी साहित्य डॉक्टर कमल किशोर गोयनका

5– प्रवासी साहित्य–एक खेमा या एक आरक्षण अर्चना पैन्युली

6– हिन्दी लेखकों की नई आरक्षण श्रेणी–उषा राज सक्सेना

7– विदेशों में भारतीयों की अगली पीढ़ी हिन्दी साहित्य पढ़ेगी। अशोक सिंह

8– इस सफर साथ–साथ दिव्या माथुर